Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

वर्तमान संगीत शिक्षण प्रणाली

DR. KAMINI SHANDIL
Assistant Professor, Govt. College Chail Koti, Shimla, Himachal Pradesh

सार

शिक्षा अपने साथ दो प्रकार के उद्देश्यों को लेकर चलती है - एक का सम्बन्ध समाज धारणा से तथा दूसरे का व्यक्ति के मानसिक विकास से है। 'संगीत' शिक्षा के उपर्युक्त दोनों उद्देश्यों की पूर्ति में सक्षम है। बालक के व्यक्तित्व को परखकर उसके अनुकूल शिक्षा देने और उसमें छिपी प्रतिभा को निखारने का कार्य माता-पिता से लेकर शिक्षक तक का होता है। बाल संगीत शिक्षा संगीतज्ञ एवं संगीत शास्त्रकार बनाने की बुनियाद है। इस बुनियाद पर ही संगीत कला का उच्चस्तरीय भवन खड़ा किया जा सकता है। आज प्राथमिक स्तर पर संगीत-शिक्षा का स्वरूप केवल 'हाबी-कलासेज़' के रूप में ही देखने को मिलता है। कुछ सरकारी विद्यालयों में 'संगीत' छठी कक्षा से दसवीं कक्षा तक 'कला-शिक्षा' विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। यह विषय संगीत, चित्रकला को संयुक्त करके बनाया गया है। आज सबसे बड़ी समस्या शिक्षक के सामने यह है कि विद्यार्थियों का संगीत के प्रति अपेक्षित रूझान नहीं है। पिछले कितने ही वर्षों से संगीत के बी.ए. एवं एम.ए. के स्तर पर विद्यार्थियों की घटती संख्या इस बात का द्योतक है कि संगीत के क्षेत्र में किसी प्रकार की व्यावहारिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के आभाव में और जीविकोपार्जन की लगभग शून्य होती जा रही सम्भावनाओं के कारण अनेक प्रतिभावन, उत्साही एवं आगे बढ़ने के इच्छुक विद्यार्थियों ने संगीत विषय को अपनाने से इनकार कर दिया है।

कुंजी शब्द: संगीत, संस्थागत शिक्षण प्रणाली।

भूमिका

'शिक्षा' शब्द संस्कृत की 'शक्' धातु से बना है, जिसका अर्थ है - शिक्षण प्रदान करना, मार्गदर्शन करना, निर्देश करना तथा आज्ञा देना आदि। 'शिक्ष्येत उपदिष्यते यत्र सा शिक्षा' अर्थात् - जिस माध्यम अथवा पद्धति के द्वारा विशिष्ट प्रकार का ज्ञान अथवा उपदेश दिया जाता है, उसे शिक्षा कहते हैं। ज्ञान अर्जित करना -'विद्या', किसी दूसरे व्यक्ति को ज्ञान देना-'शिक्षा' तथा वह विशिष्ट विधि जो शिक्षा देने के लिए प्रयुक्त की जाए, वह 'शिक्षण प्रणाली' कहलाती है। अतः शिक्षा का अर्थ वह आयोजित प्रक्रिया है, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के साथ-साथ उसमें प्रलौकिक तत्वों का समावेश करके सर्वांगीण विकास का कारण बनती है तथा एक सभ्य, सुसंस्कृत, सुयोग्य एवं सहृदय व्यक्ति का निर्माण करती है। शिक्षा के विभिन्न आयाम या धाराएं हैं, जिनमें से एक संगीत शिक्षा भी है। संगीत मानव-समाज की कलात्मक उपलब्धियों और सांस्कृतिक परम्पराओं का मूर्तिमान प्रतीक है। यह आदिम काल से ही जन-जीवन के आत्मिक उल्लास और सुखानुभूतियों की ललित अभिव्यक्ति का मधुरतम माध्यम रहा है। अतः संगीत-जैसी उत्कृष्ट कला, जो मानव-जीवन से इतना सामीप्य रखती है, कि शिक्षा प्राप्त करना व्यक्तित्व के निर्माण के लिए अति आवश्यक है यह मानव जीवन के आध्यात्मिक, मानसिक, शारीरिक, चारित्रिक विकास के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

शिक्षा अपने साथ दो प्रकार के उद्देश्यों को लेकर चलती है - एक का सम्बन्ध समाज धारणा से तथा दूसरे का व्यक्ति के मानसिक विकास से है। 'संगीत' शिक्षा के उपर्युक्त दोनों उद्देश्यों की पूर्ति में सक्षम है। प्लेटो ने आज से वर्षों पहले अनुभव कर लिया था कि 'संगीत-शिक्षण दूसरी शिक्षाओं की अपेक्षा शिक्षण का एक सशक्त साधन है क्योंकि स्वर और

लय व्यक्ति की आन्तरिक गहराइयों में अपना स्थान रखते हैं। चाहे वह पूर्ण रूप से शिक्षित हो अथवा अशिक्षित। अतः प्रत्येक प्राणी के अन्तःस्तल में छिपी रुचियों को उचित प्रकार से अनावृत कर बाहर लाना संगीत-शिक्षण द्वारा ही सम्भव है।

संगीत-शिक्षा की परम्परा वैदिक काल से ही चली आ रही है। यह परम्परा भी उतनी ही प्राचीन है, जितनी की शिक्षण-परम्परा है। वैदिक काल में जहाँ संगीत धर्म का पोशक था, वही मुगल-काल में मनोरंजन की परिधि में सिमटकर रह गए संगीत का शैक्षिक स्वरूप 'गुरु-शिष्य-परम्परा' के रूप में विकसित हुआ। यही गुरु-शिष्य-परम्परा आगे पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलकर घराना पद्धति की दूरी को तय करती हुई शैक्षणिक संस्थाओं के रूप में वर्तमान में स्थापित हुई। यदि हम प्रत्येक स्तर पर संगीत-शिक्षण प्रणाली व्यवस्था का अवलोकन करें, तो दृश्टिगोचर होगा कि बाल-शिक्षा विद्यार्थी-जीवन की नींव है। हमारे ऋषियों, विद्वानों ने भी बाल्यावस्था को संस्कारों का बीजारोपरण करने की महत्त्वपूर्ण सीढ़ी कहा है। संगीत एवं बालक के बीच एक अटूट सम्बन्ध है। बालकों को गीतों का भाव चाहे मालूम न हो, पर स्वर व लय उन्हें प्रभावित कर गाने-नाचने के लिए प्रेरित करते हैं। बालक के व्यक्तित्व को परखकर उसके अनुकूल शिक्षा देने और उसमें छिपी प्रतिभा को निखारने का कार्य माता-पिता से लेकर शिक्षक तक का होता है। बाल संगीत शिक्षा संगीतज्ञ एवं संगीत शास्त्रकार बनाने की बुनियाद है। इस बुनियाद पर ही संगीत कला का उच्चस्तरीय भवन खड़ा किया जा सकता है। संगीत शिक्षा का उद्देश्य किसी बालक को मात्र कलाकार बनाना ही नहीं, बल्कि संगीत के माध्यम से उसके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना होता है, ताकि वह कम उम्र में और खेल-खेल में ही प्रारम्भिक स्तर पर ज्ञान अर्जित कर सके। इस स्तर पर लगभग सभी विशयों को संगीत के माध्यम से सरलता से पढ़ाया जा सकता है - चाहे वह गिनती हो, अँग्रेजी-हिन्दी भाषा की वर्णमाला हो, या फिर सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित जानकारियाँ। विविध विषयों के अतिरिक्त उनमें देशभक्ति की भावना, एकता की भावना, जीवन की दैनिक क्रियाओं, आचरणों, आदरभाव आदि की भावनाएँ सरलतम धुनों में निबद्ध शिक्षाप्रद व प्रेरणादायक गीतों के माध्यम से आसानी से डाली जा सकती है।

आज प्राथमिक स्तर पर संगीत-शिक्षा का स्वरूप केवल 'हाबी-कलासेज़' के रूप में ही देखने को मिलता है। कुछ सरकारी विद्यालयों में 'संगीत' छठी कक्षा से दसवीं कक्षा तक 'कला-शिक्षा' विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। यह विषय संगीत, चित्रकला को संयुक्त करके बनाया गया है। अब माध्यमिक शिक्षा की बात करें तो यह शिक्षा की ऐसी अवस्था है, जोकि भावनाओं, संवेगों, कल्पनाओं से परिपूर्ण है। यह प्राथमिक शिक्षा की अभिवृद्धि, विस्तार के साथ ही उच्च शिक्षा की पृष्ठभूमि को विकसित करने की कड़ी स्वरूप भी है। वर्तमान में कक्षा ग्यारहवीं-बारहवीं से ऐच्छिक विशय के रूप में पढ़ाया जाता है। वादन में सितार की ही शिक्षण-व्यवस्था है। तबला और नृत्य विषय-रूप में बहुत ही कम स्थानों पर है। वाद्य वर्ग में वाइलिन, सांरगी, बांसुरी, इसराज, सरोद, तबला आदि की शिक्षा का प्रावधान विद्यालय-स्तर पर नहीं के बराबर है।

विद्यालय के पश्चात् महाविद्यालयों की प्रशिक्षण प्रणाली आती है। संगीत-शिक्षण के पाठ्यक्रम में संगीत के सैद्धान्तिक व व्यावहारिक, दोनों पक्षों में पढ़ाया जाता है। आज विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में जो शिक्षा दी जा रही है, वह सामूहिक पद्धति से दी जाती है। इस पद्धति में विद्यार्थियों को सामूहिक रूप से स्वर व लय का ज्ञान करवाया जाता है। उसके पश्चात् विश्वविद्यालयों में भी स्नातक, स्नातकोत्तर, मास्टर आफ फिलोसफी, पीएच. डी., डी.लिट., तक यह विषय विद्यमान है तथा विद्यार्थियों को इन डिग्रियों से सम्मानित किया जाता है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

आज सबसे बड़ी समस्या शिक्षक के सामने यह है कि विद्यार्थियों का संगीत के प्रति अपेक्षित रूझान नहीं है। पिछले कितने ही वर्षों से संगीत के बी.ए. एवं एम.ए. के स्तर पर विद्यार्थियों की घटती संख्या इस बात का द्योतक है कि संगीत के क्षेत्र में किसी प्रकार की व्यावहारिक एवं व्यावसायिक शिक्षा के आभाव में और जीविकोपार्जन की लगभग शून्य होती जा रही सम्भावनाओं के कारण अनेक प्रतिभावन, उत्साही एवं आगे बढ़ने के इच्छुक विद्यार्थियों ने संगीत विषय को अपनाने से इनकार कर दिया है। संगीत की शिक्षा पद्धति में भी यदि अन्य विषयों की तरह 'एप्लाइड म्यूज़िक' को समायोजित किया जाए तो इससे संगीत विद्यार्थियों को नई राह मिलेगी। इससे संगीत विषय लेकर आगे आने वाले उत्साही और लगनशील विद्यार्थियों को संगीत की इन विभिन्न दिशाओं की जानकारी और इनके व्यावहारिक पक्ष की शिक्षा दीक्षा के साथ एम.ए. के स्तर तक पहुंचते-पहुंचते वे इनमें से किसी भी एक विषय की 'स्पेष्लाइज्ड' शिक्षा प्राप्त कर उसमें निष्णात् हो जाएंगे। उदाहरण के तौर पर फिल्म के संगीत निर्देशक के पाठ्यक्रम में विद्यार्थियों को संगीत के साथ-साथ फिल्म सम्बन्धी जानकारी दी जाए। फिल्म की कहानी को ध्यान में रखकर, किसी प्रकार के भावों व संवेगों को संगीत के माध्यम से उभारकर सामने लाना चाहिए, यह भी बताया जाना चाहिए। साथ ही, फिल्मी संगीत में बड़ी संख्या में प्रयुक्त होने वाले वाद्ययन्त्रों की जानकारी और रिकार्डिंग आदि सम्बन्धी जानकारी भी दी जानी चाहिए। इसी प्रकार नाटक के संगीत निर्देशक बनने के इच्छुक विद्यार्थी नाट्य सम्बन्धी सभी जानकारी, मंच की सीमाओं का ज्ञान और नाटक की पृष्ठभूमि की शिक्षा दी जायें। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन में संगीत प्रयोग करने के इच्छुक विद्यार्थियों को तत्संबंधी आवश्यक जानकारी के साथ ही रिकार्डिंग सम्बन्धी विस्तृत जानकारी दी जानी चाहिए, जिससे वे अपना कार्य अच्छी तरह कर सके। इसके अतिरिक्त लोक-संगीत में रूचि रखने वाले शिक्षार्थियों को अपने प्रान्त व देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोकसंगीत की जानकारी के साथ ही डाक्यूमेंटेशन और प्रिज़र्वेशन सम्बन्धी जानकारी दी जानी चाहिए। साथ ही विद्यार्थी गण स्वयं उस क्षेत्र विशेष में जान कर संगीत का अध्ययन कर सकें, इस तरह की समुचित व्यवस्था भी की जानी चाहिए।

संगीत विद्यालयों में संगीत सीखने का उद्देश्य, विद्यार्थियों को, संगीत के किसी व्यवसाय में प्रवेश पाना होता है। वर्तमान युग में संगीत पर आधारित बहुत से व्यवसाय उपलब्ध है जैसे -सिनेमा, नाटक-कम्पनियां, संगीत-विद्यालय, आकाशवाणी, शासकीय जन-कल्याण सेवायें, संगीत सम्मेलन, संगीत अनुसंधान, वाद्ययंत्र निर्माण, गीत रचना, पुस्तक लेखन, प्रकाशन, कार्यक्रम संयोजन आदि है। यदि विद्यालयों के छात्र-छात्रायें कुछ समय तक पूर्ण निष्ठा के साथ अपना अभ्यास जारी रखें, तो निष्चित ही उनकी गायन, वादन शैली में और कल्पना शक्ति में परिपक्वता आ जाने पर वे उच्च श्रेणी के कलाकार बन सकते हैं। वर्तमान समय में साधनों की बहुलता होने पर भी धैय, लग्न व परिश्रम का आभाव दिखाई देता है। परन्तु यह कटु सत्य है कि साधना के बिना सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती। साधन संगीत की साधना में सार्थक बन बल प्रदान करें इसके लिए शिक्षक व विद्यार्थी दोनों को प्रयत्नशील होना होगा। आकाशवाणी, दूरदर्षन, एल.पी. रिकॉर्डस व ध्वनिमुद्रण आदि साधन व्यवसायिक कलाकार बनने में उचित योगदान दे सकते हैं। मानसिक तथा सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ संगीत की शिक्षा का लक्ष्य व्यवसायिक सफलता प्रदान करना भी है।

वर्तमान समय में यह मान्यता दृढ़ होती जा रही है कि शिक्षा का उद्देश्य विशुद्ध ज्ञानार्जन-मात्र न होकर धनार्जन भी होना चाहिए। विद्या अर्थकारी हो, यानी विद्या प्राप्त करने के उपरान्त विद्यार्थी को व्यवसाय की प्राप्ति हो। संगीत शिक्षण में भी इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता। इसलिए महाविद्यालय व विष्वविद्यालय स्तर पर संगीत पाठ्यक्रम को भली-भंति

पूरा करने के पश्चात् विद्यार्थी के समक्ष विभिन्न व्यवसायों को चुनने के लिए अनेक विकल्प होने चाहिए। इन विकल्पों में निम्नलिखित व्यवसायों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।

- विभिन्न वाद्यों का वादन
- संगीत समीक्षा एवं पत्रकारिता
- वाद्यवृन्द एवं गानवृन्द का संचालन
- पार्श्व-गायन
- संगीत-रचना
- संगीत-संयोजन
- संगीत-रचनाओं को लिपिबद्ध करना।
- समीक्षक, शास्त्रकार तथा सुयोग्य शिक्षकों का निर्माण भी वर्तमान संगीत शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य होना चाहिए।

संगीत एक परम्परागत विषय भी है और नवीन एवं व्यावसायिक भी। इसलिए इस विषय में व्यवसाय की सम्भावनाएँ अन्य विषयों से कही अधिक है। लेकिन इनको सार्थक रूप देने के लिए कठोर परिश्रम, दूर दृष्टि, विस्तृत ज्ञान और समर्पण की भावना का होना बहुत आवष्यक है।

उपसंहार

जब तक किसी विषय, समाज एवं संस्कृति में अध्ययन एवं मननशील व्यक्तियों को उचित स्थान एवं सम्मान नहीं मिलेगा, तब तक वह विषय, समाज एवं संस्कृति विकसित नहीं हो पाऐगी। अतः उच्च अधिकारियों एवं सरकार को चाहिए कि वह अधिक से अधिक युवाओं को कार्य करने के अवसर योग्यता एवं पारदर्शिता के आधार पर दे और विशिष्ठ एवं अनुभवी व्यक्ति अथवा शिक्षक मार्गदर्शक के रूप में अनेक सुझाव इनको दें।

- प्रारम्भिक से उच्च माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा मे संगीत अनिवार्य रुप से प्रतिदिन सभी विद्यालयों में पढाया जाना चाहिए।
- संगीत-विद्या को प्राप्त करने के लिए गुरु और शिष्य में परस्पर श्रद्धा, विश्वास, ध्येयनिष्ठा, प्रेम-सौहार्द, लगन और साधना का सामंजस्य होना अति आवश्यक है। साथ ही छात्रों का उत्साह बढ़ाने वाले, उन्हें योग्य मार्गदर्शन करने वाले तथा उनके मन में डिग्री-प्रेम से अधिक कला का प्रेम जागृत करने वाले शिक्षकों की महती आवष्यकता है।
- शिक्षक भी सदा अध्ययनरत और साधनारत रहें, इसलिए निश्चित समय के अन्तराल से उनके प्रदर्शन-शिविर लगने चाहिए।

- संगीत कला प्रदर्शन की कला है। प्रदर्शन के माध्यम से भावभिव्यक्ति ही उसका प्रमुख उद्देश्य है, अतः शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के प्रदर्शन-कार्यक्रम भी समय-समय पर आयोजित होने चाहिए।
- पाठ्यक्रम में राग-संख्या की जगह प्रस्तुतीकरण के स्तर को बढ़ाने से कुछ सीमा तक अच्छे परिणाम मिल सकते हैं।
- सभी विश्वविद्यालयों के पाठयक्रम मे एक सारता होनी चाहिए।
- छात्रों को केवल उपाधि प्राप्त करने के लिए अध्ययन नहीं करना चाहिए, बल्कि विषय का गहन अध्ययन करके अपने विषय ज्ञान में वृद्धि और विशय से सम्बन्धित समस्याओं का निदान करना भी परम उद्देश्य होना चाहिए।
- महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों की संख्या बड़ी मुश्किल से शिक्षकों/ व्याख्याताओं द्वारा प्रवेश के समय जुटानी पड़ती है, यदि उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों को संगीत विषय पढ़ाया जाऐ तो संगीत में रूचि हो जाने से कालेज स्तर पर स्वतः संगीत के छात्रों की संख्या बढ़ेगी और विषय में प्रगति होगी।

संदर्भ

Akansha Pal, Prof. Jayant Khot (2021). भारतीय संस्थागत संगीत-शिक्षण पद्धति एवं शिक्षक-कलाकारों का महत्व. Swar Sindhu. Vol.(09), I (01) http://swarsindhu.pratibha-spandan.

संगीत कला विहार (मई 2004), संगीत कार्यालय हाथरस

संगीत कला विहार (मई 2005), संगीत कार्यालय हाथरस